Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान

पुलिस कांस्टेबल

भाग – 1

राजस्थान का सामान्य ज्ञान, महिलाओ एवं बच्चो के प्रति अपराध एवं उनसे संबंधित कानूनी प्रावधान और नियम

SIERRA INNOVATIONS

RAJASTHAN POLICE CONSTABLE

CONTENTS

राजस्थान का भूगोल

1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	7
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	19
4.	राजस्थान की झीलें	27
5.	राजस्थान की जलवायु	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	39
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	44
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	
10.	राजस्थान में पशुधन	53
11.	राजस्थान में कृषि	57
12.	सिंचाई परियोजनाएँ	
13.	राजस्थान की जनसंख्या	63
14.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	66
15.	राजस्थान में उद्योग	70

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1. प्राचीन राजस्थान का इतिहास 76
   - परिचय 76
   - प्राचीन सभ्याताएँ 79
   - महाजनपद काल 83
   - मौर्यकाल 84
   - मौर्योत्तर काल 84
   - गुप्तकाल 84
   - गुप्तोत्तर काल 85
2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 86
   - प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ
   - राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ
3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 128
   - 1857 की क्रांति 128
   - प्रमुख किसान आन्दोलन 130
   - प्रमुख जनजातीय आन्दोलन 134
   - प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन 135
   - राजस्थान का एकीकरण 139
4. राजस्थान कला एवं संस्कृति 144
   - राजस्थान के त्यौहार 144
   - राजस्थान के लोक देवता 150
   - राजस्थान की लोक देवियाँ 155
   - राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 159
   - राजस्थान के लोकगीत 165
   - राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ 166
   - राजस्थान के संगीत 167
   - राजस्थान के लोक नृत्य 168

- राजस्थान के लोकनाट्य
- राजस्थान की जनजातियाँ 172
- राजस्थान की चित्रकला
- राजस्थान की हस्तकलाएँ 176
- राजस्थान का साहित्य 179
- राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ 185
- राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र

5. राजस्थान की स्थापत्य कला 187
   - किले एवं स्मारक 187
   - राजस्थान के धार्मिक स्थल 196
   - राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज 201
   - राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व
   - वेश–भूषा व आभूषण 203

राजस्थान : राजव्यवस्था

1. राज्य की कार्यपालिका 208
2. राज्य का राजनीतिक घटनाक्रम
3. सचिवालय 216
4. पुलिस प्रशासन 220
5. पटवारी 223

6.	राज्य निर्वाचन आयोग	224
7.	राज्य सूचना आयोग	226
8.	स्थानीय स्वशासन	228
9.	राज्य मानवाधिकार आयोग	233
10.	राज्य महिला आयोग	235
11.	उच्च न्यायालय	235
❖	महिलाओं एवं बच्चों के प्रति अपराध एवं उनसे संबंधित कानूनी प्रावधानों/नियमों की जानकारी	239

दिए गए **QR Code** को स्कैन करके टॉपर्सनोट्स अचीवर्स ऐप डाउनलोड करें एवं इस ऐप के माध्यम से किताब में दिये गए **QR Codes** को स्कैन करके विषय संबंधी अतिरिक्त जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

राजस्थान का भूगोल

राजस्थान की उत्पत्ति

अंगारालैण्ड
पैंजिया का उत्तरी भाग जिससे उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ है ।

गोंडवानालैण्ड
पैंजिया का दक्षिणी भाग जिससे दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ है ।

टेथिस सागर
यह एक भूअन्नति है जो अंगारालैण्ड व गोंडवानालैण्ड के मध्य स्थित है ।

Note– राजस्थान का निर्माण

GT

G – गोंडवाना लैण्ड
अरावली
हाडौती

T – टेथिस सागर
मरूस्थल
मैदान

भौगोलिक प्रदेश

अरावली व हाडौती भारत के प्रायद्वीप पठार का हिस्सा है जबकि मरूस्थल व मैदानी भाग भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा है ।

A- राजस्थान : स्थिति, विस्तार एवं आकार

भारत

उत्तर पश्चिम	

विश्व

	उत्तर पूर्व

एशिया

दक्षिण पश्चिम	

- ग्लोबीय स्थिति में राजस्थान उत्तर पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है ।

B- विस्तार

- अक्षांश – $23^0 3'$ से $30^0 12'$ उत्तरी अक्षांश
- देशांतर – $69^0 30'$ से $78^0 17'$ पूर्वी देशांतर
- क्षेत्रफल – 3,42,239.74 वर्ग किमी.
  (1,32,140 वर्ग मील)

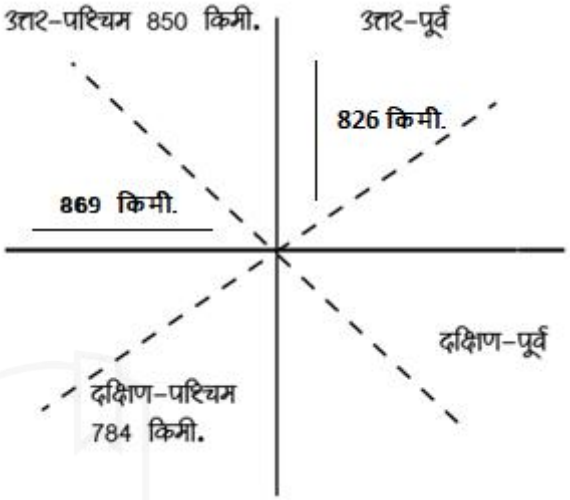

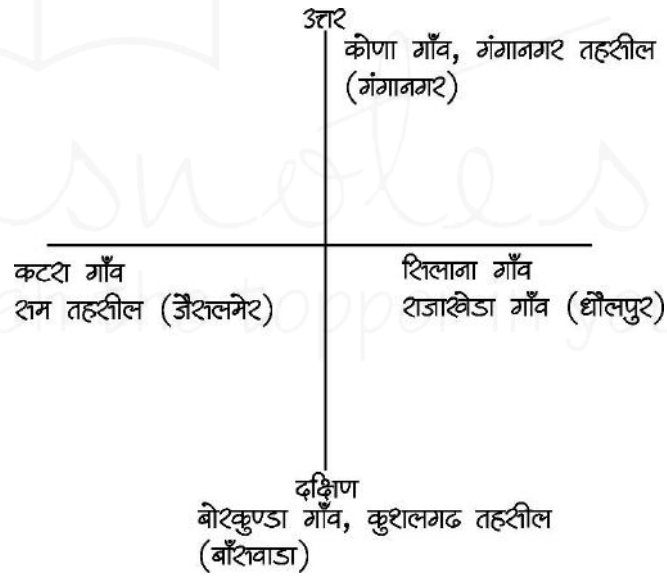

C- आकार

Rhombus – T. H. हैडले ने कहा
विषम चतुष्कोणीय (रोहम्बस)
पतंगाकार

राजस्थान के क्षेत्रफल संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

1. राजस्थान का क्षेत्रफल 342239.74 वर्ग किमी है ।
2. यह भारत के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है ।
3. विश्व क्षेत्रफल का राजस्थान 0.25 प्रतिशत धारण करता है ।
4. राजस्थान भारत का सबसे बडा राज्य है ।
5. राजस्थान का सबसे बडा जिला जैसलमेर है । 38401 वर्ग किमी इसका क्षेत्रफल है ।
6. जैसलमेर सम्पूर्ण राजस्थान का 11.22 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
7. धौलपुर राजस्थान का सबसे छोटा जिला है जिसका क्षेत्रफल 3034 वर्ग किमी है ।
8. धौलपुर सम्पूर्ण राज्य का .89 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
9. जैसलमेर धौलपुर से 12.67 गुणा बडा है ।
10. कर्क रेखा राज्य के डुंगरपुर की सीमा को छूते हुए तथा बांसवाडा के मध्य से होकर गुजरती है ।
11. कर्क रेखा की लम्बाई राज्य में 26 किमी है ।
12. कर्क रेखा पर सबसे लम्बा दिन 13 घंटे 27 मिनट का होता है जो 21 जून को होता है । यह कर्क संक्रांति कहलाता है ।
13. राज्य में पूर्व से पश्चिम समय अंतराल 35 मिनट 8 सैकेण्ड का है ।
14. राज्य का मध्य गांव गगराना नागौर है ।

प्रमुख देश		राजस्थान का क्षेत्रफल (बडा)
जर्मनी	–	बराबर
जापान	–	बराबर
ब्रिटेन	–	दोगुना
श्रीलंका	–	5 गुना
इजराइल	–	17 गुना

राजस्थान के क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बडे एवं सबसे छोटे जिले

बडे व छोटे जिले

जैसलमेर	(38401 km^2)	धौलपुर	(3034 km^2)
बीकानेर	(30247 km^2)	दौसा	(3432 km^2)
बाडमेर	(28387 km^2)	डूँगरपुर	(3770 km^2)
जोधपुर	(22850 km^2)	राजसमन्द	(3860 km^2)
नागौर	(17716 km^2)	प्रतापगढ	(4449 km^2)

(c) राजस्थान की सीमाः-

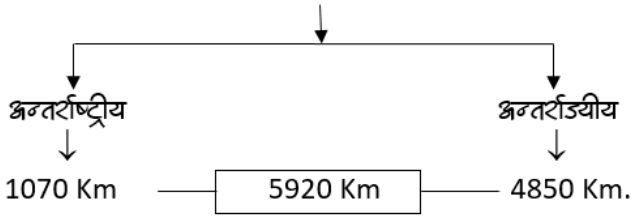

अन्तर्राज्यीय सीमा एवं उन पर स्थित जिले

सीमा– 4850 किमी.

पडोसी राज्य	उनकी सीमा पर राजस्थान के जिले
पंजाब (89 किमी.)	हनुमानगढ, गंगानगर
हरियाणा (1262 किमी.)	जयपुर, भरतपुर, हनुमानगढ, सीकर, चुरू, झुंझुनु, अलवर
उत्तरप्रदेश (877 किमी.)	भरतपुर, धौलपुर
मध्यप्रदेश (1600 किमी.)	धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाडा, कोटा, बांसवाडा, बांरा, झालवाड, प्रतापगढ, चित्तोडगढ
गुजरात (1022 किमी.)	बाडमेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाडा

- भारत के मानचित्र में निरपेक्ष स्थिति उत्तर–पश्चिम में है ।
- भारत मे किसी भी स्थान की निरपेक्ष स्थिति – नागपुर (महाराष्ट्र) से ज्ञात की जाती है ।
- राजस्थान में किसी भी स्थान की निरपेक्ष स्थिति मेडता (नागौर) से ज्ञात की जाती है ।

सूर्य की किरणों की निरपेक्ष स्थिति

- सूर्य की सर्वाधिक सीधी किरणों वाला जिला – बाँसवाडा (21 जून)
- सर्वाधिक तिरछी किरणों वाला जिला – श्री गंगानगर (22 दिसम्बर)
- रात व दिन की अवधि बराबर – 21 मार्च, 23 सितम्बर
- सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त – सिलाना (धौलपुर)
- सबसे अन्त में सूर्योदय व सूर्यास्त – कटरा गाँव (सम, जैसलमेर)

नोट –

(1) राजस्थान के वे जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैः-

- हनुमानगढ – पंजाब . हरियाणा
- भरतपुर – हरियाणा . U.P.
- धौलपुर – U.P. + M.P.
- बाँसवाडा – M.P. गुजरात

(2) कोटा व चित्तौडगढः- राजस्थान के वे जिले हैं जो एक राज्य (M.P.) से दो बार सीमा बनाते हैं ।

(3) कोटा :- राजस्थान का वह जिला हैं जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता हैं वह अविखण्डित हैं ।

(4) चित्तौडगढः- राजस्थान का वह जिला हैं जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता हैं व विखण्डित हैं ।

(5) भीलवाडाः- चित्तौडगढ को 2 भागो में विखण्डित करता हैं ।

पंजाब → बहावलनगर, बहावलपुर, रहीमयारखानपुर

पाक प्रान्त

सिन्ध → घोटक्की, शुक्कर, संधार, खैरपुर, अमरकोट, थारपारकर

अन्तर्राज्यीय सीमा पर

- सर्वाधिक सीमा — झालावाड (560 किमी.) (M.P.)
- सबसे कम — बाड़मेर (14 किमी.) (गुजरात)

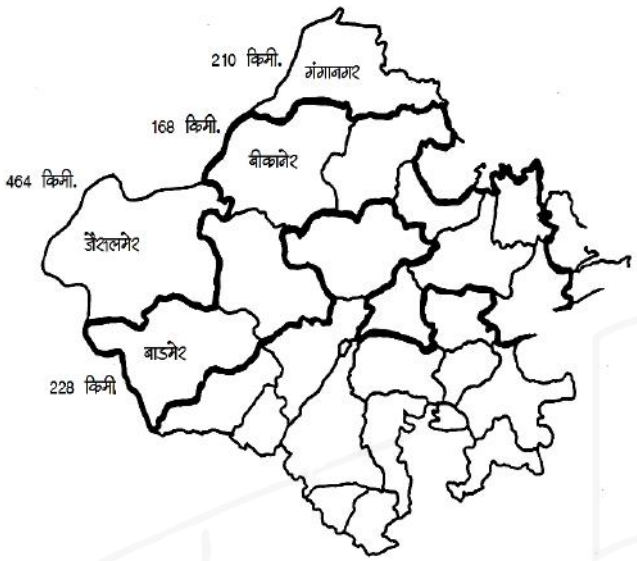

- 25 जिले : राजस्थान के सीमावर्ती जिले
- 23 जिले : अन्तर्राज्यीय सीमावर्ती
- 4 जिले : अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती
- 2 जिले : अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती (श्रीगंगानगर . बाड़मेर)

8 जिले : राजस्थान के वे जिले जो अन्तः स्थलीय (Land locked) सीमा बनाते हैं ।

पाली सर्वाधिक 8 जिलों के साथ सीमा बनाता है । जो निम्न हैं –
बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर, नागौर ।

अजमेर :– चित्तौड़गढ के बाद राजस्थान का दूसरा विखण्डित जिला
राजसमन्द :– राजसमन्द अजमेर का दो भागों में विखण्डित करता है ।
इसका जिला मुख्यालय इसके नाम से नहीं है ।
राजनगर राजसमन्द का जिला मुख्यालय है ।
नागौर :– नागौर सर्वाधिक संभाग मुख्यालयों के साथ सीमा बनाता है ।
(जयपुर, अजमेर, जोधपुर, बीकानेर)

सीमावर्ती विवाद

मानगढ हिल्स विवाद
स्थिति = बाँसवाड़ा
विवाद = राजस्थान–गुजरात के मध्य

1. पाकिस्तान का बहावलपुर सर्वाधिक सीमा गंगानगर के साथ बनाता है ।
2. न्यूनतमक सीमा बाड़मेर के साथ बनाता है ।
3. पाकिस्तान के 9 जिले भारत के साथ सीमा बनाते हैं ।
4. पाकिस्तान के 6 जिले जैसलमेर के साथ सीमा बनाते हैं ।
5. भारत के 4 जिले पाकिस्तान के साथ सीमा बनाते हैं ।
6. जैसलमेर सर्वाधिक सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
7. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
8. नाम– सर सिरील रेड रेडक्लिफ रेखा
9. निर्धारण तिथि – 17 अगस्त 1947
10. शुरूआत – हिन्दूमलकोट
11. अंत – शाहगढ (बाड़मेर)
12. राजस्थान की कुल सीमा का 18% (1070 किमी.) है।
13. पाकिस्तान प्रान्त राज्य = 2 (पंजाब व सिन्ध)
14. श्रीगंगानगर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सबसे निकटतम जिला मुख्यालय है ।
15. बीकानेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
16. धौलपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
17. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
18. शुरूआत – हिन्दूमलकोट
19. अंत – शाहगढ(बाड़मेर)

Start — हिन्दुमलकोट (श्रीगंगानगर) 210 किमी.
↓
बीकानेर 168 किमी. (Minium)
↓
जैसलमेर 464 किमी. (Maxium)
↓
End — शाहगढ (बाड़मेर) 228 किमी.

नवीनतम जिले

26 अजमेर (1 नवम्बर, 1956)
27 धौलपुर (15 अप्रैल, 1982)
28 बारां (10 अप्रैल 1991)
29 दौसा (10 अप्रैल 1991)
30 राजसमंद (10 अप्रैल 1991)
31 हनुमानगढ (12 जुलाई 1994)
32 करौली (19 जुलाई 1997)
33 प्रतापगढ (26 जनवरी 2008)

राजस्थान के प्रादेशिक के परिवर्तन का स्वरूप एवं वर्तमान नाम

प्राचीन नाम	बदला स्वरूप	वर्तमान नाम
योद्धेय	जोहयावाटी	गंगानगर
जांगल	भटनेर	बीकानेर
अहिच्छत्रपुर	अहिपुर	नागौर
गुर्जर	गुरजान्ना	मण्डोर-जोधपुर
शाकंभरी सांभर	अजयमेरू	अजमेर
श्रीमाल स्वर्णगिरि	गेलोर भीनमाल	बाडमेर
वल्ल	दुंगल	जैसलमेर
अर्बुद	चन्द्रावती	सिरोही
विराट	रामगढ	जयपुर
शिवि	चित्तौड	उदयपुर
कांठल	देवलिया	प्रतापगढ
पालन	दशपुर	झालावाड
व्याघ्रावाट	वांगड	बांसवाडा
जाबालीपुर	स्वर्णगिरि	जालौर
कुरू		भरतपुर, करौली
शौरसेन		धौलपुर
हयहय		कोटा, बूंदी
चंद्रावती		आबू, सिरोही
छप्पन मैदान		प्रतापगढ, बांसवाडा के छप्पन ग्राम समूह
मेवल		डूंगरपुर, बांसवाडा के बीच का भाग
ढूंढाड		जयपुर
थली		चुरू, सरदार शहर

हाडौती		कोटा, बूंदी, झालावाड
शेखावटी		चरू, सीकर, झुंझनू

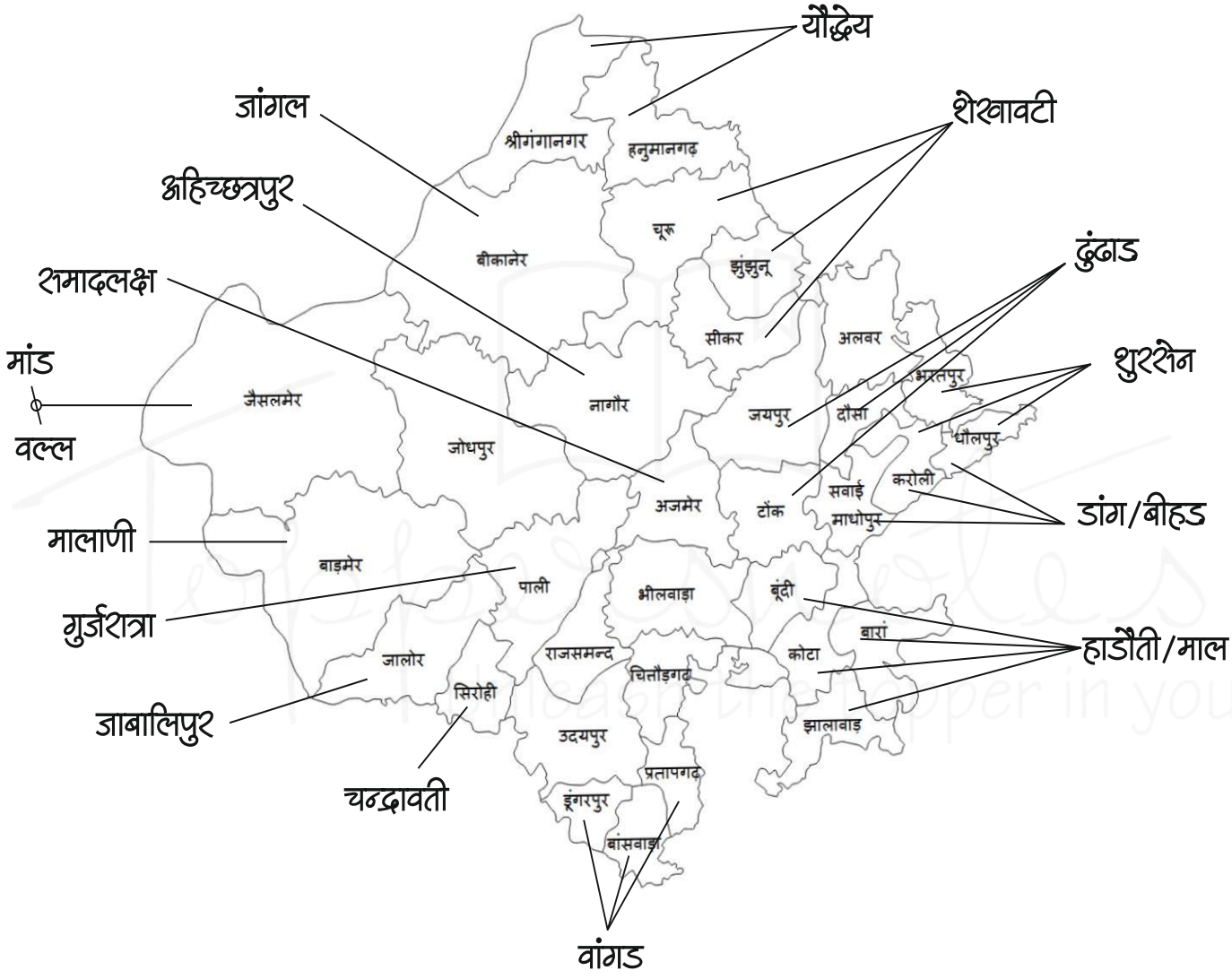

जनसंख्या

जनगणना – संघ सूची

जनसंख्या – समवर्ती

2011 की जनगणना :-

- क्रमानुसार-15वीं
- व्यवस्थित-14 वीं
- स्वतंत्रता के बाद- 7वीं
- 21वीं शताब्दी की- दूसरी
- 15वीं जनगणना का बजट-2200 करोड रू.
- प्रति व्यक्ति खर्चा- 18.19 रू.
- 2011 की जनगणना में शामिल कुल जिले-640 (वर्तमान में जिले-714)
- जनगणना शुभंकर-प्रगणक शिक्षिका (सांकल Enumerator)
- जनगणना आदर्श वाक्य- हमारी जनगणना हमारा भविष्य''

जनगणना 2011 के विशेष बिन्दू

- NPR (National Population Register) राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर'' पहली बार बनाया गया है ।
- प्रथम बार घरों की गणना ।
- किन्नरों की गणना प्रथम बार(पुरूषों में गणना)
- जातीय जनगणना-दूसरी बार-2011(प्रथम बार-1931).
- जनगणना 2011 दो चरणों में पूर्ण हुई-
  प्रथम चरण-15 मई-30 जून 2010
  द्वितीय चरण-9 फरवरी-28 फरवरी 2011

राजस्थान में जनसंख्या

जनसंख्या 6.85 करोड	
सर्वाधिक	सबसे कम
1. जयपुर 66 लाख	1. जैसलमेर 6.07 लाख
2. जोधपुर 36.08 लाख	2. प्रतापगढ 8.06 लाख
3. अलवर 36.07 लाख	3. सिरोही 10 लाख
4. नागौर 33 लाख	4. बूंदी 11.01 लाख

नोटः- राजस्थान में देश की कुल जनसंख्या का 5.67% एवं विश्व की जनसंख्या की लगभग 1% हिस्सा है ।

- जनसंख्या की दृष्टि से राज्य का देश में आठवां स्थान है ।
- राज्य की दशकीय जनसंख्या में बढोतरी 1.20 करोड हुई ।
- 2011 में कुल जनसंख्या में सर्वाधिक बढोतरी जयपुर में हुई ।
- शिशु जनसंख्या (0-6वर्ष) कुल जनसंख्या की-15. 44%
- कुल जनसंख्या में पुरूष जनसंख्या 51.86% एवं महिला जनसंख्या 48.14%

दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर

दशकीय जनसंख्या वृद्धि 21.30%	
सर्वाधिक	सबसे कम
1. बाडमेर 32.5%	1. श्रीगंगानगर 10%
2. जैसलमेर 31.8%	2. झुंझुनू 11.7%
3. जोधपुर 27.7%	3. ikyh 11.9%
4. बाँसवाडा 26.5%	4. बूंदी 15.4%

नोटः- राजस्थान की जनसंख्या दर में सर्वाधिक ऋणात्मक बढोतरी वाला दशक 1911-21(-6.29%)

- राजस्थान की जनसंख्या वृद्धि दर में सर्वाधिक बढोतरी वाला दशक 1971-81(32.97%)
- राजस्थान की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक बढोतरी वाला दश 1991-2001(125 लाख की बढोतरी)
- राजस्थान में 1901-2011 तक राज्य की कुल जनसंख्या में 566% कि वृद्धि हुई, जो की 1901 की जनसंख्या (1.029 करोड) का 6.66 गुणा है ।

जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या घनत्व 200	
सर्वाधिक	सबसे कम
1. जयपुर (595)	1. जैसलमेर (17)
2. भरतपुर (503)	2. बीकानेर (78)
3. दौसा (476)	3. बाडमेर (92)
4. अलवर (438)	4. चूरू (147)

नोट :- 100 से कम जनसंख्या घनत्व वाले जिले-जैसलमेर, बीकानेर, बाडमेर ।

- मरूस्थलीय जिलो(पश्चिमी राजस्थान) का जनसंख्या घनत्व सबसे कम है ।
- सिरोही (202), टोंक (198), का जन घनत्व लगभग राजस्थान के कुल जनघनत्व के बराबर है ।

लिंगानुपात

लिंगानुपात 928	
सर्वाधिक	सबसे कम
1. डूँगरपुर 994	1. धौलपुर 846
2. राजसमंद 990	2. जैसलमेर 852
3. पाली 987	3. करौली 861
4. प्रतापगढ 983	4. भरतपुर 880

शिशु लिंगानुपात 888

सर्वाधिक	सबसे कम
1. बांसवाडा 934	1. झुंझुनूँ 837
2. प्रतापगढ 933	2. सीकर 848
3. भीलवाडा 924	3. करौली 852

नोट :- राजस्थान में सभी जिलों का लिंगानुपात 1000 से कम है ।

- राजस्थान का औसत लिंगानुपात(928) देश के औसत लिंगानुपात (943) से कम है ।
- राजस्थान के पाली जिले का ग्रामीण लिंगानुपात 1003 है जो 1000 से ऊपर एक मात्र जिला है ।
- राजस्थान के टोंक जिले का शहरी लिंगानुपात 985 है जो शहरी लिंगानुपात में सर्वाधिक है ।

साक्षरता :- 7 वर्ष या अधिक आयु का व्यक्ति जिसे अक्षर ज्ञान हो ।

साक्षरता दर 66.1%	
सर्वाधिक	सबसे कम
1. कोटा 76.6%	1. जालौर 54.9%
2. जयपुर 75.5%	2. सिरोही 55.3%
3. झुंझुनूँ 74.1%	3. प्रतापगढ 56.9%
4. सीकर 71.9%	4. बांसवाडा 56.3%

पुरूष साक्षरता

पुरूष साक्षरता दर 79.2%	
सर्वाधिक	सबसे कम
1. झुंझुंनू 86.9%	1. प्रतापगढ 69.5%
2. कोटा 86.3%	2. बांसवाडा 65.5%
3. जयपुर 86.1%	3. सिरोही 70.10%
4. सीकर 85.1%	4. जालौर 70.7%

महिला साक्षरता

महिला साक्षरता दर 52.1%	
सर्वाधिक	सबसे कम
1. कोटा 65.9%	1. जालौर 38.5%
2. जयपुर 64.0%	2. सिरोही, जैसलमेर 39.7%
3. झुंझुनूँ 61.0%	3. बाडमेर 40.06%

नोटः-

- साक्षरता दर बाडमेर, चूरू में कम हुई है, शेष सभी जिलों में बढी है ।
- करौली की साक्षरता दर(66.2) लगभग राजस्थान की साक्षरता दर के बराबर है ।

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

	ग्रामीण जनसंख्या	शहरी जनसंख्या
कूल जनसंख्या	5.15 करोड	1.70 करोड
प्रतिशत	75.1 प्रतिशत	24.9 प्रतिशत
सर्वा. जनसंख्या	जयपुर	जयपुर
प्रतिशत	डूँगरपुर	कोटा
न्यूनतम जनसंख्या	जैसलमेर	प्रतापगढ
प्रतिशत	कोटा	डूँगरपुर
लिंगानुपात	933	914

राजस्थान में अनुसूचित जाति एवं जनजाति राजस्थान की कुल जनसंख्या में

	अनुसूचित जाति (SC)	जनजाति (ST)
प्रतिशत	17.8	13.5
संख्या	122.21 लाख	92.38 लाख
सर्वाधिक जनसंख्या	जयपुर	उदयपुर
प्रतिशत में सर्वा.	श्रीगंगानगर	बांसवाडा
सबसे कम संख्या	डूँगरपुर	बीकानेर
प्रतिशत में न्यूनतम	डूँगरपुर	नागौर, बीकानेर
लिंगानुपात 923	948	

राजस्थान में धार्मिक जनसंख्या		
धर्म	वर्ष 2011	स्थान(सर्वाधिक)
हिन्दू	88.5	जयपुर
मुस्लिम	9.1	जयपुर
सिख	1.3	श्रीगंगानगर
जैन	0.9	जयपुर
ईसाई	0.1	बांसवाडा

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

ग्रामीण लिंगानुपात – 933
सर्वाधिक – 1003 (पाली)
न्यूनतम – 841 (धौलपुर)
शहरी लिंगानुपात – 914
सर्वाधिक – 985 (टोंक)
न्यूनतम – 807 (जैसलमेर)

Note :-

राजस्थान के लोक संत

भक्ति

सगुण	निर्गुण
मूर्ति पूजा करना	मूर्ति पूजा के विरोधी
आस्तिक कहलाते है ।	नास्तिक कहलाते है ।
जैसे – रामानुज, वल्लभ, निम्बार्क, नाथ गौडीय मीराबाई	जैसे– जसनाथी, दादू, कबीर पंथी, परनामी

हिन्दू धर्म को तीन भागों में बाँटा गया है ।
1. भागवत/आलवार धर्म – विष्णु को मानने वाले
2. नयनार/आडियार धर्म – भगवान शिव को मानने वाले

शैव धर्म की 12 शाखाएँ है जिनमे से 3 राजस्थान में है ।
1. माननाथी – स्थापना आयरा देवनाथ द्वारा
   नाथ सम्प्रदाय का सबसे बडा मंदिर – महामंदिर (जोधपुर)
2. वैराग्य नाथी – स्थापना – भर्तृहरि द्वारा
   प्रधानपीठ – ताताडुंगा (पुष्कर, अजमेर)
3. नाथ – यह सबसे नवीन शाखा है ।
   - स्थापना – नाथ मुनि द्वारा
   - शाखा को मत्स्येन्द्र नाथ ने आगे बढाया ।
   - नाथ सम्प्रदाय के मंदिर को आसन कहते है ।
4. शाक्त धर्म – जो देवियों की उपासना करते है ।

यमुनाचारी – वैष्णव धर्म की स्थापना । दक्षिण भारत के प्रमुख संत

शिष्य – रामानुज
↓
रामानन्द

रामानुजाचार्य – जन्म– तिरुपति नगर
- दक्षिण भारत मे मध्यकाल में भक्ति जनक कहा जाता है ।
- विशिष्टाद्वैतवाद का सिद्धान्त दिया ।
- यमुनाचार्य गुरु थे ।

रामानन्द – जन्म 1299 में इलाहाबाद (उ. प्र.)
कर्मभूमि – काशी
गुरु – राघवानन्द
सिद्धान्त – विशिष्टाद्वैत

वल्लभाचार्य – जन्म 1478 में वाराणसी
शुद्धैतवाद मत दिया ।

1. दादूदयाल

- जन्म : 1544 में फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को अहमदाबाद में हुआ । कर्मभूमि राजस्थान में हुई ।
- बचपन का नाम – महाबली
- पिता – लोदीराम
- गुरू – बुद्धन या ब्रह्मनंद
  1568 में दादूदयाल सांभर आ गये ।
  1574 में इन्होने दादूपंथ की स्थापना की । – मुख्य पीठ (केन्द्र) : ''नरैना (जयपुर)''
  ये राजा मानसिंह के समकालीन थे ।
  दादू की ग्रंथ – दादू जी की वाणी
  दादूजी रा दूहा
- प्रधान पीठ नारायणा (सांभर, जयपुर) में है ।
  - यहाँ दादू जी के चरण चिह्न पूजे जाते है ।
  - दादूदयाल ने मैमजीन दुर्ग की नींव रखी ।
  - दादू पंथ सत्यराम से अभिवादन करते है ।

• दादू पंथ के पंचतीर्थ

1. कल्याणपुर – जयपुर
2. नारायणा – जयपुर
3. भराणा – जयपुर
4. सांभर – जयपुर
5. आमेर – जयपुर

- दादूदयालजी को ''राजस्थान का कबीर'' कहा जाता है ।
- इन्होंने निर्गुण भक्ति का सन्देश दिया था ।
- आमेर के राजा भगवन्त दास ने दादूदयाल जी की मुलाकात फतेहपुर सिकरी में अकबर से करवाई ।
- दादूदयालजी ने अपने उपदेश ''ढूँढाडी भाषा '' में दिये थे । जिसे सधुकडी भाषा कहा जाता है ।
- दादूदयालजी के प्रमुख 52 शिष्य थे जिन्हें ''52 स्तम्भ'' कहा जाता है ।
- दादू पंथ की शाखाएँ
  1. खालसा
  2. विरक्त
  3. उतरादे
  4. खाकी
  5. नागा
- दादूपंथ के मंदिरों को ''दादू द्वारा'' कहा जाता है ।
- यहाँ पर दादूदयालजी के ग्रन्थ ''वाणी'' की पूजा की जाती है ।
- सत्संग स्थान को ''अलख दरीबा'' कहते है ।
- दादूपंथी मृत व्यक्ति के शरीर को पशु पक्षियों के खाने के लिए छोड देते है ।

- दादू संप्रदाय में सत्यराम से अभिनंदन किया जाता है ।
- दादूजी का शरीर "भैराणा की पहाडी (जयपुर)" में रखा गया था जिसे "दादू खोल/दादू पालका" कहा जाता है ।
- दादू ने निपंख आन्दोलन चलाया ।
- 1603 में ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी को दादूजी की मृत्यु हो गई ।

दादूजी के प्रमुख शिष्य

1. रज्जब जी :
   - सांगानेर के पठान थें ।
   - निवास स्थान रज्जब द्वार कहलाता है ।
   - इन्होंने दादूजी के उपदेश सुनकर शादी नही की तथा "आजीवन" दूल्हे के वेश में रहें ।
   - रज्जब जी ने संसार को वेद तथा सृष्टि को कुरान कहा ।

रज्जब जी की पुस्तकें

1. रज्जब वाणी
2. सर्वंगी

2. सुन्दरदास जी

- जन्म – दौसा (खंडेलवाल परिवार में)
- पिता – शाह चोखा (परमानंद)
- माता – सती
- इसे दुसरा शंकराचार्य भी कहा जाता है ।
- इन्होंने नागा शाखा की स्थापना की
- नागा साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के राजा प्रतापसिंह की मदद की ।
- नागा साधु अपने साथ हथियार रखते थें । इनके रहने के स्थान को छावनी कहा जाता था ।
- "गेटोलाव" (दौसा) में सुन्दरदास जी की समाधि बनी हुई है ।
- निम्न ग्रंथों की रचना की –
- सुंदर सागर, सुंदर विलास, बावली, रामजी अष्टक, ज्ञान समुद्र
- इन्हें सुंदरदास फतेहपुरिया भी कहा जाता है ।

3. जाम्भोजी

- 1451 में पींपासर (नागौर) में एक पंवार राजपूत परिवार में जन्म हुआ था ।
- पिता – लोहट जी
- माता – हंसा बाई
- इन्हें "विष्णु का अवतार" माना जाता है । (कृष्ण का अवतार)
- बचपन का नाम : धनराज था ।
- विश्नोई समाज के उपदेश स्थल को साथरी कहते है ।
- 1526 ई. को तालवा गाँव (मुकाम नोखा, बीकानेर) में जाम्भोजी का निधन हुआ जहाँ इस सम्प्रदाय की प्रधान पीठ है ।
- इनका मेला फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है ।
- 1482 में "समराथल (बीकानेर)" नामक स्थान पर इन्होंने अपने अनुयायीयों को "29 उपदेश" दिये थे इसलिए इनके अनुयायी "बिश्नोई (बिस+नौं)" कहलाते हैं ।
- सबसे पहला अनुयायी इनके चाचा पुलोजी थे ।
- "मुकाम (बीकानेर)" में जाम्भोजी का मन्दिर बना हुआ है । जहाँ पर "आश्विन तथा फाल्गुन अमावस्या" को मेला लगता है ।
- ये सिकन्दर लोधी के समकालीन थे ।
- इसने जाम्भोजी के कहने पर गो हत्या बंद कर दी थी ।
- बीकानेर क्षेत्र में अकाल के समय जाम्भोजी के कहने पर सिकन्दर लोधी ने चारा भेजा था ।

जाम्भोजी की प्रमुख शिक्षाऐं

1. हरे पेड नहीं काटने चाहिए ।
   सिर साटे रूख रहे, तो भी सस्तों जावा ॥
   मुख्यः खेजडी
2. जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए ।
3. नीले कपडे नहीं पहनने चाहिए ।
4. विधवा विवाह किये जाने चाहिए ।

जाम्भोजी को "पर्यावरण वैज्ञानिक संत" कहा जाता है ।
जाम्भोजी के उपदेश – जम्भ संहिता, जम्भ वाणी, जम्भ सरिता, जम्भ सागर, बिश्नोई धर्म प्रकाश में संकलित है ।
जाम्भोजी के मंदिर मे किसी प्रकार की मूर्ति नही होती ।
वर्ष में 3 बार आश्विन शुक्ल सप्तमी, माघ शुक्ल सप्तमी, चैत्र शुक्ल को मेले लगते है ।

विश्नोई सम्प्रदाय के आराध्य स्थल

मुकाम (बीकानेर) – जाम्भोजी का समाधि स्थल

रोटू (नागौर) – विश्नोईयों का धार्मिक स्थल

पीपासर (नागौर) – जाम्भोजी का जन्म स्थान खडाऊ को पीपा कहते है ।

जाँगलू (बीकानेर) – चैत्र व भाद्रपद अमावस्या को मेला लगता है ।

जाम्भा (जोधपुर) – विश्नोईयों का पुष्कर जहाँ चैत्र व भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।

4. जसनाथ जी

- जन्म स्थान –1482 कार्तिक शुक्ल एकादशी कतरियासर (बीकानेर) जाट परिवार
- पिता का नाम – हमीर जाणी
- माता का नाम – रूपा दे
- बचपन का नाम – जसवंत
- गुरू – गोरखनाथ
- मुख्य मंदिर – कतरियासर
- अन्य पीठ
  - पांचला – नागौर
  - पूरनासर – बीकानेर
  - बम्मल – बीकानेर
  - मालासर – बीकानेर
  - लिखमादेसर – बीकानेर
- आश्विन शुक्ल सप्तमी को मेला लगता है ।
- सिद्ध – ये पुजारी होते है ।
- जसनाथी जाट – ये गृहस्थ होते है ।
- गोरखमाल्या नामक जगह पर 12 वर्षो तक कठोर तपस्या की ।
- सिकन्दर लोदी के समकालिन थे ।
- अपने अनुयायीयों को 36 उपदेश दिये थे ।
- भगवा वस्त्र धारण करते है ।
- इनके अनुयायी गले में काली ऊन के धागे पहनते है ।
- ''मोर पंख'' तथा ''जाल वृक्ष'' को पवित्र मानते है ।
- इनके अनुयायीयों द्वारा अग्नि नृत्य करवाया जाता है ।
- जसनाथी की संप्रदाय की समाधियाँ बाडी कहलाती है ।
- सिद्ध रामनाथ द्वारा लिखा यशो पुराण जसनाथियों का बाईबिल है ।
- अनुयायी जो इस संसार से विरक्त हो जाते है 'परमहंस कहलाते है ।

ग्रन्थ :

1. सिंभुदडा (इनके उपदेश)
2. कोडा

5. चरणदास जी

- जन्म स्थान – डेहरा (अलवर)
- मुख्य केन्द्र – दिल्ली
- बचपन का नाम – रणजीत
- गुरू का नाम – शुकदेव
- अपने अनुयायीयों को ''42 उपदेश'' दिये ।
- इनके अनुयायी ''पीले रंग के कपडे'' पहनते थे ।
- इन्होने नादिर शाह (1739 ईरान का राजा – भारत पर आक्रमण) के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी ।

प्रमुख शिष्या:

दया बाई ⟶ पुस्तकें :– दया बोध
विनय मलिका

सहजोबाई ⟶ पुस्तक :–सहज प्रकाश, सात वार, निर्णय

- इस सम्प्रदाय के लोग ''सखी भाव'' से श्री कृष्ण भगवान की पूजा करते है ।
- ''सगुण'' (भक्ति पूजा वाले) तथा ''निर्गुण'' दोनों की शिक्षा दी थी ।
- उपदेश ''मेवाती भाषा'' में दिये थें ।

चरणदास जी के निम्न ग्रंथ है –
ब्रह्म सागर, ब्रह्म ज्ञान सागर, भक्ति चरित्र, ज्ञान स्वरोदय

6. संत पीपा

- जन्म – 1425 ई.
- वास्तविक नाम – प्रताप सिंह खिंची
- ''गागरोण (झालावाड)'' के राजा थे ।
- रामानन्द जी के शिष्य थे । (12 शिष्य थें ।) (भक्ति आंदोलन – 7वी – 8वी सदी)
- पीपा का मुख्य मंदिर जहाँ चैत्र पूर्णिमा को मेला भरता है ।
- एक अन्य मंदिर जोधपुर में है ।
- मंदिर मे इनके चरण चिह्नों की पूजा होती है ।
- पीपा के उपदेश जोग चिन्तामणि में संग्रहित है ।
- संत पीपा ''दर्जी समाज के प्रमुख देवता'' है ।
- इन्होंने निर्गुण भक्ति का संदेश दिया था ।
- ''समदडी (बाडमेर)'' में पीपा का 'मुख्य मंदिर' तथा ''गागरोण'' में 'छतरी' बनी हुई है ।
- मेला – चैत्र शुक्ल पूर्णिमा
- ''टोडा (टोंक)'' में संत पीपा की 'गुफा' बनी हुई है ।
- झालावाड में चरण चिह्न की पूजा होती है ।

7. संत धन्ना

- जन्म : धुवन (टोंक) (जाट परिवार में)
- यह भी रामानन्द जी के शिष्य थे ।
- राजस्थान में भक्ति आन्दोलन शुरू किया था ।
- ''बोरानाडा (जोधपुर)'' में इनका मंदिर बना हुआ है ।

8. संत हरिदास जी

- जन्म 1455 ई.
- वास्तविक नाम – हरिसिंह सांखला
- पहले डाकू थे परन्तु बाद में संत बन गये
- इन्होंने हरिदासी या "निरंजनी सम्प्रदाय" चलाया था
- इन्होनें "निर्गुण व सगुण" दोनों प्रकार की भक्ति का संदेश दिया था ।
- मुख्य केन्द्र – "गाढा (डीडवाना)"

पुस्तके :
1. मन्त्र राज प्रकाश
2. हरि पुरूष जी की वाणी
   - इनको कलियुग का वाल्मिकी के नाम से जाना जाता है ।

9. संत मावजी

- जन्म स्थान – साबला (डूँगरपुर)
- इन्होने भगवान श्री कृष्ण की पूजा "निष्कलंक अवतार" के रूप में की थी ।
- इन्होने निष्कलंकी सम्प्रदाय चलाया था ।
- इन्होने कृष्णा लीला की रचना "वागडी भाषा" में की थी ।
- संत मावजी ने वेणेश्वर धाम (डूँगरपुर) की स्थापना की थी ।
- यहां माघ पूर्णिमा को मेला भरता है । इसे आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है ।
- इन्होने लसोडियां आन्दोलन चलाया था ।
- संत मावजी की वाणी जिसमें संग्रहीत है उसे 'चौपडा' कहते है ।

प्रमुख ग्रंथ
1. चोपडा (इस ग्रन्थ में तीसरे विश्वयुद्ध की भविष्यवाणी है ।)

10. बालनन्दाचार्य

- बचपन का नाम – बलवंत शर्मा
- मुख्य पीठ – लोहार्गल (झुंझुनु)
- यह अपने पास सेना रखते थे इसलिए इन्हे "लश्कर संत" कहा जाता है ।
- यह औरंगजेब के समकालीन थे ।
- इन्होंने 52 मूर्तियों की औरंगजेब से बचाकर उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया था ।
- इन्होंने औरंगजेब के खिलाफ मेवाड के राजसिंह तथा मारवाड के दुर्गादास राठौड की सहायता की थी ।

11. नरहड पीर

- वास्तविक नाम : हजरत शक्कर बाबा
- मुख्य केन्द्र : "नरहड (झुंझुनु)"
- "कृष्ण जन्माष्टमी" को इनका उर्स लगता है । यहाँ पर पागलों का इलाज किया जाता है ।
- यह साम्प्रदायिक सौहार्द तथा हिन्दु-मुस्लिम एकता का स्थान है ।
- इन्हे "बागंड का धणी" कहा जाता है ।
- "सलीम चिश्ती" इनका शिष्य था ।
- शक्कर पीर बाबा/नरहड शरीफ दरगाह के नाम से भी जाना जाता है ।

12. मीराबाई

- जन्म स्थान – "कुडकी (पाली)" 1498 ई.
- पिता : रतन सिंह
- बचपन का नाम – पेमल
- मीरा बाई का पालन पोषण अपने दादा "दूदा" के पास मेडता में हुआ ।
- मीरा बाई के पति : "भोजराज" (सांगा पुत्र, मेवाड)
- मीरा बाई श्री कृष्ण को अपना पति मानकर "सगुण रूप" में पूजा करती थी ।
- मीराबाई के गुरू – "रैदास"
- रैदास जी की छतरी चित्तौड के किले में बनी हुई है ।
- मीराबाई द्वारिका के "रणछोड मंदिर" के भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति में विलीन/समा गयी थी ।
- महात्मा गांधी, मीराबाई को अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने वाली "सत्याग्रही महिला" मानते थें ।
- मीराबाई को "राजस्थान की राधा" कहा जाता है ।
- मीरा के प्रारंभिक गुरु चंपाजी थे ।
- गंजाधर गुर्जर गौड मीरा के धार्मिक गुरू थे ।
- मीरा वे वृन्दावन में दासी सम्प्रदाय चलाया जिससे पुरुष भी स्त्रियों की वेशभूषा पहनते है ।

- मीरा के मंदिर
  1. चारभुजानाथ मंदिर (मेडता, नागौर)
  2. कुम्भश्याम मंदिर (चित्तौडगढ)
  3. जगत शिरोमणी मंदिर (जयपुर)

मीराबाई की पुस्तकें :
1. रूकमणी मंगल
2. सत्यभामा नू रूसणो
3. गीत गोविन्द
4. नरसी जी रो मायरो (यह पुस्तक रतना खाती के सहयोग से लिखी गई)
5. मीरा की गरीबी

6. टीका राग गोविंद
   - मीरा के पद जो वृद्ध की मृत्यु पर गाये जाते है, हरजस कहलाते हैं ।
   - मीरा महोत्सव आश्विन पूर्णिमा को चित्तौड में आयोजित किया जाता है।
   - मीराबाई पर 1 अक्टूबर 1952 को 2 आना का डाक टिकट जारी हुआ था ।

13. गवरी बाई

- ''बांगड की मीरा'' कहा जाता है ।
- डूँगरपुर के ''महारावल शिवसिंह'' ने ''बाल – मुकुन्द'' मंदिर बनवाया था, जिसे ''गवरी बाई का मंदिर भी कहा जाता है ।''
- भक्त कवि दुर्लभः- इन्हें ''वागड का नृसिंह'' कहा जाता है ।

सम्प्रदाय

1. वल्लभ सम्प्रदाय/रूद्र/पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय

- मुख्य पीठ – नाथद्वारा (उदयपुर)
- दर्शन – शुद्ध अद्वैवाद
- ग्रंथ – अणुभाष्य
- श्री ''कृष्ण के बाल–स्वरूप'' की पूजा करते है ।
- इनके मंदिर को हवेली कहा जाता है । यहाँ गाया जाने वाला संगीत 'हवेली–संगीत'
- मंदिर में श्री कृष्ण मूर्ति के पीछे दीवार पर/पर्दे पर जो चित्र बनाये जाते है उन्हे ''पिछवाई'' कहा जाता है । (नाथद्वारा की पिछवाई प्रसिद्ध है ।)
- राजमहल : वल्लभ संप्रदाय के मंदिर – 41
- भारत में वल्लभ संप्रदाय के 7 प्रमुख केन्द्र है ।

1 यू.पी में 1 गुजरात में और

5 केन्द्र राजस्थान में :–
1. मथुरेश जी – कोटा
2. श्री नाथ जी – सिहाड (नाथद्वारा)
3. द्वारिकाधीश – काकरोली राजसमन्द
4. गोकुलचन्द्र – कामां (भरतपुर)
5. मदन मोहन – कामां (भरतपुर)

- इस संप्रदाय का मंदिर जिस गांव में होते है वह गांव 'द्वारा' कहलाते है ।

2. रामानन्द जी सम्प्रदायः (रसिक सम्प्रदाय)

- इस सम्प्रदाय के लोग ''भगवान राम'' की पूजा ''रसिक नायक'' के रूप में करते है । इसलिए इसे ''रसिक सम्प्रदाय'' भी कहा जाता है ।
- ''कृष्ण भट्ट'' की पुस्तक –''राम रासौ'' में राम व सीता की प्रेम कहानी है ।

प्रमुख केन्द्रः

1. गलताजी– संस्थापक – कृष्ण दास पयहारी आमेर राजा पृथ्वी राज तथा उसकी रानी बालाबाई, कृष्णदास के अनुयायी थे ।
2. रैवासा (सीकर)– अग्रदास जी
3. गलता तीर्थ को मंकी वैली के नाम से जानते है।

3. निम्बार्क सम्प्रदाय

- मुख्य केन्द्र – सलेमाबाद (अजमेर)
- संस्थापक – परशुराम
- दर्शन – द्वैताद्वैत (भेदाभेद)
- ग्रंथ – वेदांत परिभाष्य

- इस सम्प्रदाय के लोग राधा जी को श्री कृष्ण की पत्नी मानते हैं ।
- मेला – भाद्रपद शुक्ल 8 (राधाष्टमी)
- निम्बार्काचार्य – राजस्थान में इस सम्प्रदाय के मंदिरो को गोपालद्वारें कहते हैं ।

4. लालदासी सम्प्रदाय

- जन्म – धौलीदूब (अलवर)
- मुख्य केन्द्र – नंगला जहाज (भरतपुर)
- संस्थापक – लालदास जी
- समाधि – शेरपुर
- मेव जाति के लकडहारे थे ।
- आश्विन एकादशी तथा माघ पूर्णिमा के दिन लगता है ।
- गुरू – ''गद्दन चिश्ती''
- इन्होने अपने उपदेश ''मेवाती भाषा'' में दिया था ।
- कुटिया – सिंध शिक्षा पहाड पर

5. रामस्नेही सम्प्रदाय

- यह सम्प्रदाय ''निर्गुण भक्ति'' में विश्वास रखता है ।
- इनके अनुसार राम दशरथ-पुत्र ना होकर, यहाँ पर मतलब निर्गुण (निराकार) राम है ।
- इनके मन्दिर को रामद्वारा कहा जाता है ।
- इनके साधु – संत ''गुलाबी रंग के कपडे'' पहनते है ।

मुख्य केन्द्र

1. शाहपुरा (भीलवाडा) – रामचरण जी (संस्थापक)
   अणभैवाणी (पुस्तक)
   यहाँ पर होली के अगले दिन ''फूलडोल का मेला'' होता है ।
2. रैण (नागौर) – दरियावजी
3. सीहथल (बीकानेर) – हरिरामदास जी
   पुस्तक ''निशानी''(योग पर)
4. खेडापा (जोधपुर) – रामदास जी

नोट

जैमलदास – ''सिंहथल'' तथा ''खेडापा'' शाखा के आदि आचार्य है ।

6. परनामी सम्प्रदाय

- मुख्य पीठ – पन्ना (एम.पी)
- संस्थापक – प्राणनाथ
- आदर्श नगर (जयपुर) में भी ''परनामी सम्प्रदाय'' का मंदिर है ।
- सम्प्रदाय का मुख्य ग्रंथ – ''कुजलम स्वरूप''

7. अलखिया सम्प्रदाय

- मुख्य केन्द्र – बीकानेर
- संस्थापक – स्वामी लाल गिरी
- सम्प्रदाय का ग्रंथ – अलख स्तुति प्रकाश

8. नवल सम्प्रदाय

- मुख्य केन्द्र – जोधपुर
- संस्थापक – नवलदास जी
- ग्रन्थ – नवलेश्वर अनुभववाणी

9. गूदड सम्प्रदाय

- मुख्य केन्द्र – दांतडा (भीलवाडा)
- संस्थापक – संतदास जी

10. राजाराम जी

- मुख्य केन्द्र – शिकारपुरा (जोधपुर)
- पटेल जाति के लोग मुख्य आस्था रखतें है ।
- इन्होंने पर्यावरण संरक्षण का उपदेश दिया था ।

आभूषण व वेशभूषा

सिर

रखडी (रखडी), बोर, बोरला, टीला, शीशफूल, सांकली, दामनी, सुरमा, मांग, मेबंद/मेमंद, टीका, टिकडा । गोफण, मेडी, पतरी, टिड्डी-भलको

गला/छाती

माँदळिया, खुंगाळी, पंचलडी, जंजीर, तुलसी, बजट्टी, हाँसली, तिमणियाँ, पोत, हार, हंसहार, चन्द्रहार (पाँच सात लडियों युक्त), बजरबंटी, बलवेडा, हाँकर, चंपकली, सरी, कंठी, कंठमाला, हालरो । टुस्सी, मंगलसूत्र, तांती, हमेल, आड, डोरो, खींवली

कान

झेला/झाले, टोटी, लौंग, छेलकडी, मुरकिया, कर्णफूल, पीपलपत्रा, फूलझुमका, अंगोट्या, बाली, टॉप्स, झूमका, सुरलिया, लटकन, बजट्टी, कुडक, गुडढा ।

नाक

लूंग, काँटा, नथ, लटकन, वारी, चूनी, चोप, भंवरियो । कुडक, फीणी, मोरूवर, नकेसर, बेसर, खीवण ।

चन्द्रहार

पाँच -सात लडीवाला एक प्रकार का हार ।

चूंप

दाँतो में सोने के पतर की खोळ बनाकर चढाई जाती है । कोई स्त्री दाँतो के बीच में सार से छिद्र बनाकर उसमें सोने की कील जडवाती है । जिसे चूंप कहा जाता है ।

झालरा

सोने अथवा चाँदी की लडों वाला आभूषण जिसमें घूघरियाँ लटकती है ।

अंगुली

दामणा, हथपान, छडा, बींछिया ।

अँगूठी, बींठी, मूंदडी

अंगुलियों में पहने जाने वाले छल्लों को कहा जाता है ।

कुडक, नथडी या भँवरकडी

अँगूठी के बराबर या उससे छोटा छल्ला, जो छोटी लडकियाँ पहनती है ।

कमर

कंदोरा, जंजीर, तगडी, करधनी । कणकती - कमर में पहनी जाने वाली सोने अथवा चाँदी की झूलती श्रृंखलाओं की पट्टी । सोने - चाँदी की इस सांकळ को कन्दोरा भी कहते है ।
लटका -लहँगे के नेफे में अटकाकर लटकाया जाने वाला आभूषण, इसमें सोने / चाँदी के छल्ले या चाबियाँ लटकी रहती है ।

हाथ

चूड/चूडी, नोगरी, आँवळा, हथफूल, कडा, कंगण, चाँट, गजरा, खंजरी । पुणची, आंवला सेवटा, बगडी, फूंदा

बाजू

बाजू, बाजूबंद, भुजबंध, अणत, टड्डो, तकया

पाँव

पैंजणी, कडा, टणका, आँवळा/आँवला, डीवी, कडा, तोडा, छड (छडा), गोळ्या, लंगर, लछन, हिरनामैन, पायल/पायजेब, नुपूर, घँघरू, झाँझर, नेवरी, रमझोळ, गोळ्या, फोलरी, बीछुडी, चट्टी/चुट्टी, पगपान, पंजा, झाँझरिया/झांझर्या, नेवर, कंकनी, कडलौ

वेशभूषा

ओढनी

शरीर के निचले हिस्से में घाघरा और ऊपर कुर्ती, कांचली पहनने के बाद स्त्रियाँ ओढनी ओढती है ।
दामणी- मारवाड में ओढनी का एक प्रकार

चुनरी

इसमें अनेक तरह के अभिप्राय बनते है । आहड (उदयपुर) में भीलों की चूनड छपती है ।

पोमचा (पीला)

इस विशेष प्रकार की ओढनी में पद्म या कमल की तरह के गोल-गोल अभिप्राय बने होते है ।
पोमचा बच्चे के जन्म पर शिशु की माँ के लिए मातृ पक्ष की ओर से लाया जाता है ।

लहरिया

श्रावण में विशेष कर तीज के अवसर पर राजस्थान की स्त्रियाँ इसे पहनती है ।
पंचरंगा लहरिया सर्वश्रेष्ठ माना जाता है ।

जामा

राजस्थान में शादी-विवाह या युद्ध जैसे विशेष अवसरों पर इसे पहनने का रिवाज था ।
शरीर के ऊपरी भाग में पहने जाने वाला वस्त्र है ।

बुगतरी (बख्तरी)

ग्रामीणों द्वारा श्वेत रंग की पहने जाने वाली अंगरखी ।

अंगरखा/अंगरखी

- बदन पर पुरूष वर्ग काले रंग का अंगवस्त्र पहनता है जिस पर सफेद धागे से कढाई की जाती है ।
- ग्रामीण भाषा में इसे 'बुगतरी' भी कहते है ।

राजस्थानी अचकन

- अंगरखी का उत्तर रूप ।

चुगा (चोगा)

- सम्पन्न वर्ग द्वारा अंगरखी के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र, यह प्रायः रेशमी, ऊनी या किमखाब का बना होता था ।
  नोट - सवाई माधोसिंह का चोगा विश्व का सबसे बडा चोगा है । जो वर्तमान में जयपुर सिटी पैलेस में रख गया है ।

आतमसुख

- अंगरखी और चुगे पर पहने जाने वाला वस्त्र ।
- सिटी पैलेस (जयपुर) - यहाँ सबसे पुराना आतमसुख सुरक्षित है ।

पटका/कमरबंद

जामा के ऊपर कमरबन्द बांधने की प्रथा थी जिसमें तलवार या कटार घुसी होती थी ।

अंगोछा

- यह पुरूषों का वस्त्र है जिसे वे सिर पर बांधते है ।
- केरी भांत का अंगोछा बहुत लोकप्रिय है ।

कटकी

यह अविवाहित युवतियों और बालिकाओं की ओढनी है । इसकी जमीन लाल होती है ।

लूगडा (अंगोछा साडी)

इसमें सफेद जमीन पर लाल बूटे छपे होते है । आदिवासी स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाला यह घाघरा का ही एक रूप है ।

तारा भांत की ओढनी

यह आदिवासी स्त्रियों में बडी लोकप्रिय है ।

ज्वार भाँत की ओढनी

ज्वार के दानों जैसी छोटी-छोटी बिन्दी वाली जमीन और बेल बूटे वाले पल्लू की ओढनी ।

लहर भाँत की ओढनी

इसमें ज्वार भांत जैसी बिन्दियों से लहरिया बना होता है और किनारा व पल्लू ज्वार भांत जैसा ही होता है ।

ठेपाडा/ढेपाडा

भीलों में पुरूष वर्ग द्वारा पहने जाने वाली तंग धोती ।

सिंदूरी

भीलों में महिला वर्ग द्वारा पहने जाने वाली लाल रंग की साडी । शादी के समय

खोयतू/घाघरा

लंगोटिया भीलों में पुरूषों द्वारा कमर पर बांधी जाने वाली लंगोटी को कहते है ।

कछावू

लंगोटिया भील की महिलाओं द्वारा स्त्रियों के घुटने तक पहना जाने वाला नीचा घाघरा । यह वेशभूषा प्रायः काले और लाल रंग की होती है ।

चीर, चारसों, दुकूल

स्त्रियों की वेशभूषाएँ ।

पग

पगडियाँ

चिन्दी

गरीब व्यक्ति 3-4 हाथ लम्बे कपडे को सिर पर बांधते थे वही चिन्दी कहलाता था ।

पाग/पागना/मोठिया

इसका अर्थ है - लपेटना या सरोबार होना । पगडी को सजाने के लिए तुर्रे, सरपेच, बालाबंदी, घुगघुगी, शोरपेच, पछेवडी, फतेपेच आदि काम में लेते थें । राखी के पर्व पर भाई के पास भेजी जाने वाली पगडी 'मोठडा' रंग की होती है । प्रायः मलमल को फाडकर पाग बनायी जाती

थी । पाग की लम्बाई 14 से 20 मीटर तथा चौडाई 6 से 8 इंच तक होती है ।

खिडिकिया पाग

यह मारवाड में 17 वीं सदी तक प्रचलित रही, वर्तमान में खिडकिया पाग का उपयोग केवल 'गणगौर' के अवसर पर 'ईसरजी' के लिये किया जाता है ।

पेचा

पाग का एक प्रकार । मध्यकाल में क्षत्रिय वर्ग के लोग पेच ही बांधते थे । राजस्थान के 'जला' लोकगीत में राठौडी पेचे का वर्णन मिलता है । मदील पेचे का एक प्रकार है ।

साफा

यह अरबी के साफः से बना हुआ शब्द है - साफ का अर्थ है उष्णीय या पगडी ।

जोधपुर साफा

इसका प्रचलन महाराजा जसवन्तसिंह (द्वितीय) से माना जाता है । जोधपुर के महाराज प्रतापसिंह ने जोधपुरी साफे को देश-विदेश में ख्याति दिलाई ।

रोबीला साफा

- मारवाड का प्रसिद्ध है ।
- राजस्थान के राजपूतों में राठौडी पेंच सर्वाधिक पसंद किया जाता था ।

चौराही गोल पेंच

जालौर जिले में पगडी का यह प्रकार प्रचलित था ।

मेवाडी पगडी

- राज्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध पगडी ।
- अकबर के समय में मेवाड में ईरानी पद्धति की अटपटी पगडी का प्रचलन था । मेवाड महाराणा के पगडी बाँधने वाला व्यक्ति छाबदार कहलाता था ।
- बरखसमा पाग मेवाड में प्रचलित सभी पागों में यह सर्वाधिक प्रचलित रूप है ।

भदील पगडी

दशहरे पर प्रयोग की जाती थी ।

लहरिये की पगडी

तीज पर पहनी जाती है ।

टोपी के प्रकार

चौखुलिया, दखलिया, खाकसा, कांकसानुमा, चौपलिया, दुपलिया ।

हरावल 'हरोल'

- युद्ध के मैदान में खडी सेना की अग्रिम पंक्ति को कहते है । पिछली अन्तिम पंक्ति को चण्दावल, चंढावळ या 'चण्डोल' कहते है । चूण्डावतों के सरदार जैतहि ने ऊंटाले के युद्ध में किले में पगडी सहित पना सिर कटवाकर फिंकवा कर हरावल में रहने के चूण्डावतों के अधिकार की रक्षा की ।
- मेवाड के महाराणा अमरसिंह के पुत्र कर्णसिंह ने मुगल बादशाह शाहजहाँ के साथ अपनी पगडी की अदला - बदली कर मेवाड और मुगलों में भाईचारा कायम किया ।
- यदि कोई निःसंतान व्यक्ति किसी बच्चे को गोद लेना चाहता है तो समाज और अपने कुटुम्ब के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समक्ष उसे पगडी बंधानी पडती है । मारवाड में इस प्रकार से पगडी बंधाने को 'पोतिया बंधाना' कहा जाता है । मेवाड में इस प्रकार पगडी बांधने को 'लहरिया बंधाना' कहते है ।
- पगडी की रस्म का अर्थ है मृत्यु के बारहवें दिन मृतक के पुत्र को पगडी बंधाकर उसका उत्तराधिकारी घोषित किया जाना । शोक, रहने तक सफेद साफे पहने जाते है ।
- विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले 'बनडा' गीतों व उमराव गीत अथवा खंगार, जला गीतों में पगडियों का वर्णन मिलता है ।
- गींदड के खेल में पेचा का गीत गाया जाता है ।
- मारवाड के राष्ट्रगीत 'धूंसा' में ढुंढाडी और मारवाड की पगडियों के मामले में जनता की भिन्न - भिन्न अभिरूचि को प्रकट किया गया है । शेखावटी में ढुंढाडी पाग (मोर-पंख के तरह सुंदर) का प्रचलन था ।
- जाटों में तोरीफूला या बूंटीदार दुपट्टे की पाग को बांधने का रिवाज था ।